मेरे ह्रदय की वेदना.....

राजेश कुमार नेमा
वरिष्ठ शोध सहायक,
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की।

इन्सान, इन्सान को इन्सान बना देता है,
इन्सान, इन्सान को शैतान बना देता है।
अगर इन्सान की इन्सानियत साथ दे तो,
इन्सान, इन्सान को भगवान बना देता है ।

फलो में जहर मिला करते हैं,
आस्तीन में सॉप पला करते हैं।
यह दुनिया बड़ी बेवफा है साथी,
अपने ही मीत अपनों से जला करते हैं।

टूटे हुये दिल की कोई चाह नहीं होती,
भटके हुए राही की कोई राह नहीं होती।
हो अगर इन्सान निर्धन साथी,
तो उसकी कहीं वाह-वाह नहीं होती।

बिछड़े दिलों को भी मिलने दो,
नन्ही कलियों को भी खिलने दो।
स्नेह दान तुम देकर साथी,
बुझते दीपों को भी जलने दो।

मुझे कुछ कहना है कह लेने दो,
मन के भाव शब्दों में ढ़ह लेने दो।
मेरे मीत मुझे अब मत रोको,
मुझे भावों की सरिता में बह लेने दो।